PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

हमें तो कोई दिक्कत नहीं है!

Author: Alison Byrnes
Illustrator: Alison Byrnes
Translator: Madhubala Joshi

पहाड़ी बकरी उना साकूलैंड में रहती थी।

साकूलैंड एक अनोखा देश था। वह समुद्रतट से जँगलों तक, घाटियों से पहाड़ों तक फैला था।

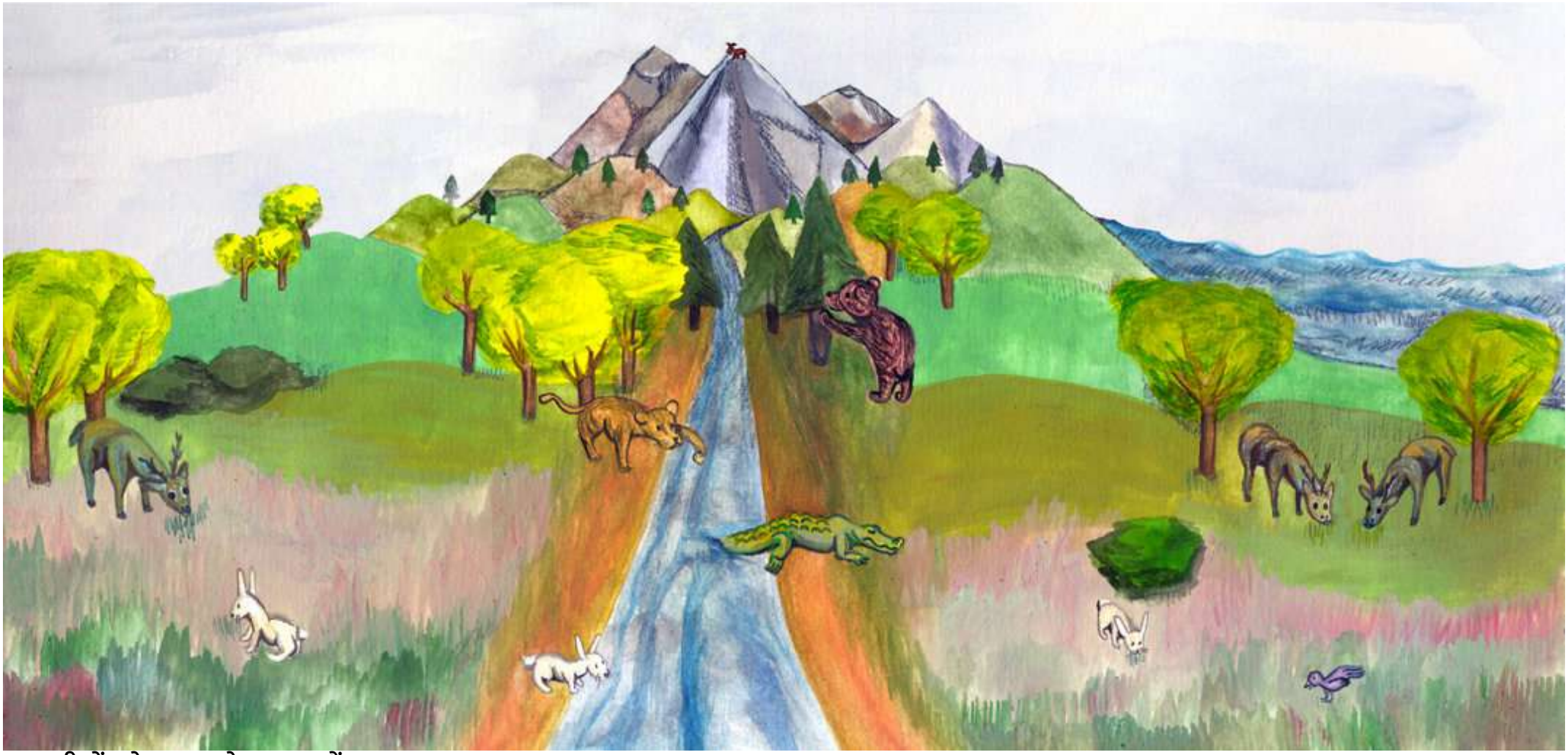

सब जीवों को अपना देश साकूलैंड प्यारा लगता था।

वहाँ खरगोशों और हिरनों के लिए घास थी, चिड़ियों और भालुओं के नाश्ते के लिए कीड़े-मकोड़े थे, और मगरमच्छों और जँगली बिल्लियों के लिए मछलियाँ थीं। और सभी के पीने के लिए साफ, ठण्डा पानी भी था।

उना बाकी जीवों से काफ़ी ऊपर, एक पहाड़ की चोटी पर रहती थी।

पथरीली पहाड़ी पगडंडियों पर ऊपर चढ़ना-उतरना
काफ़ी कठिन काम था और इसमें समय भी बहुत लगता था।
उना बाकी जानवरों के साथ कम ही समय बिताती थी और उसे अकेले रहने की आदत पड़ गई थी। बल्कि उसे अकेले रहना ही अच्छा लगता था - अकेले रहते हुए वह जो चाहे, जब चाहे, कर सकती थी।

कभी-कभी उना को लगता था कि बाकी जानवर ज़रा बेवकूफ से हैं। "उन सब को सब कुछ साथ में ही क्यों करना होता है? क्या वह अकेले धारा तक पानी पीने भी नहीं जा सकते? मैं तो जाती हूँ," उना सोचती।

सभी जीवों के काम करने के अपने ही मनपसन्द तरीके थे।
लेकिन उना को लगता था कि मेरा ही तरीका सबसे अच्छा है।

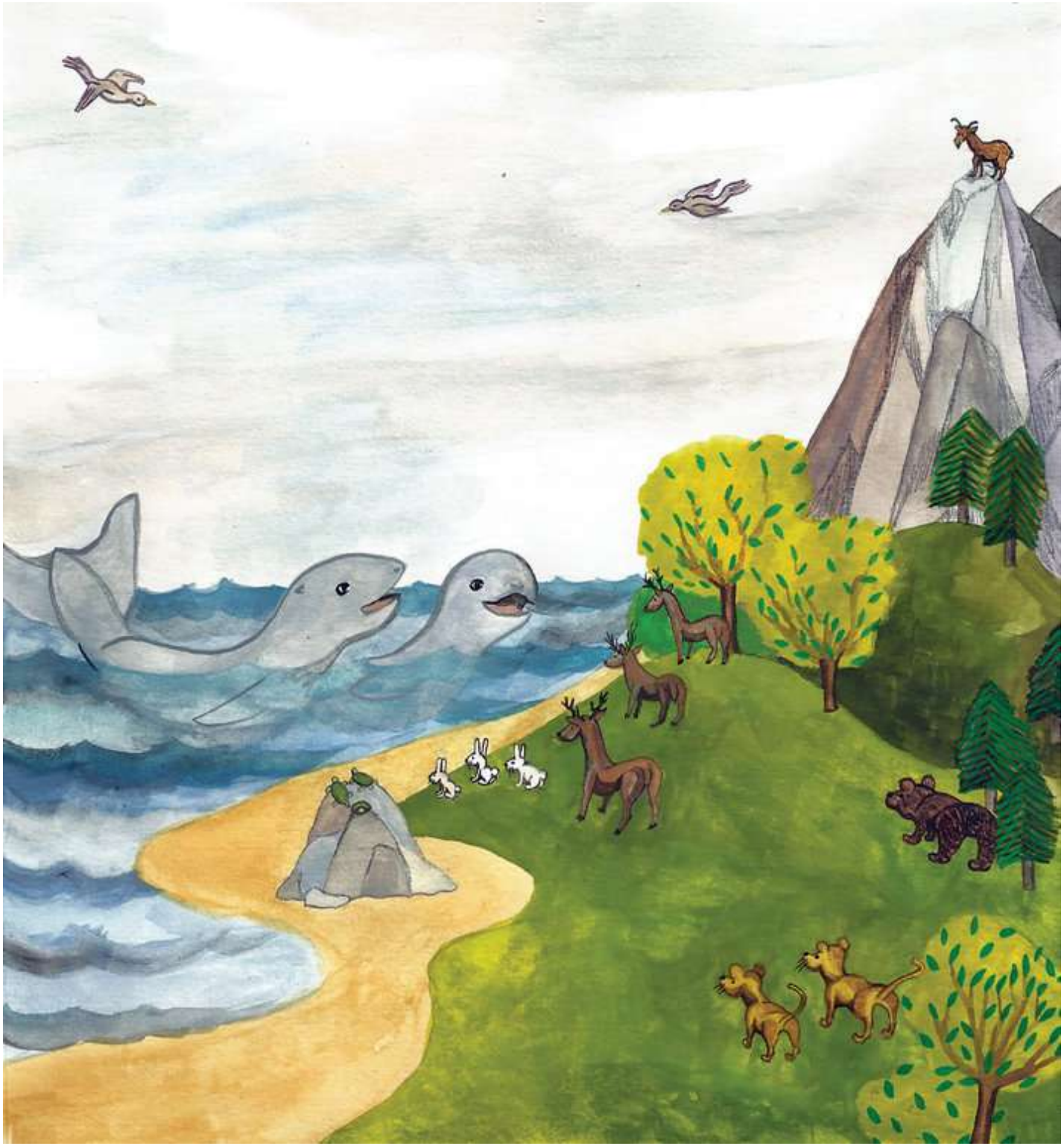

धीरे-धीरे, साकूलैंड की जलवायु बदलने लगी। लेकिन जीवों ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।

एक दिन, व्हेलों ने, जो कि साल का ज़्यादातर समय साकूलैंड के समुद्र में बिताती थीं, ऐलान किया कि वे कहीं और रहने जा रही हैं।

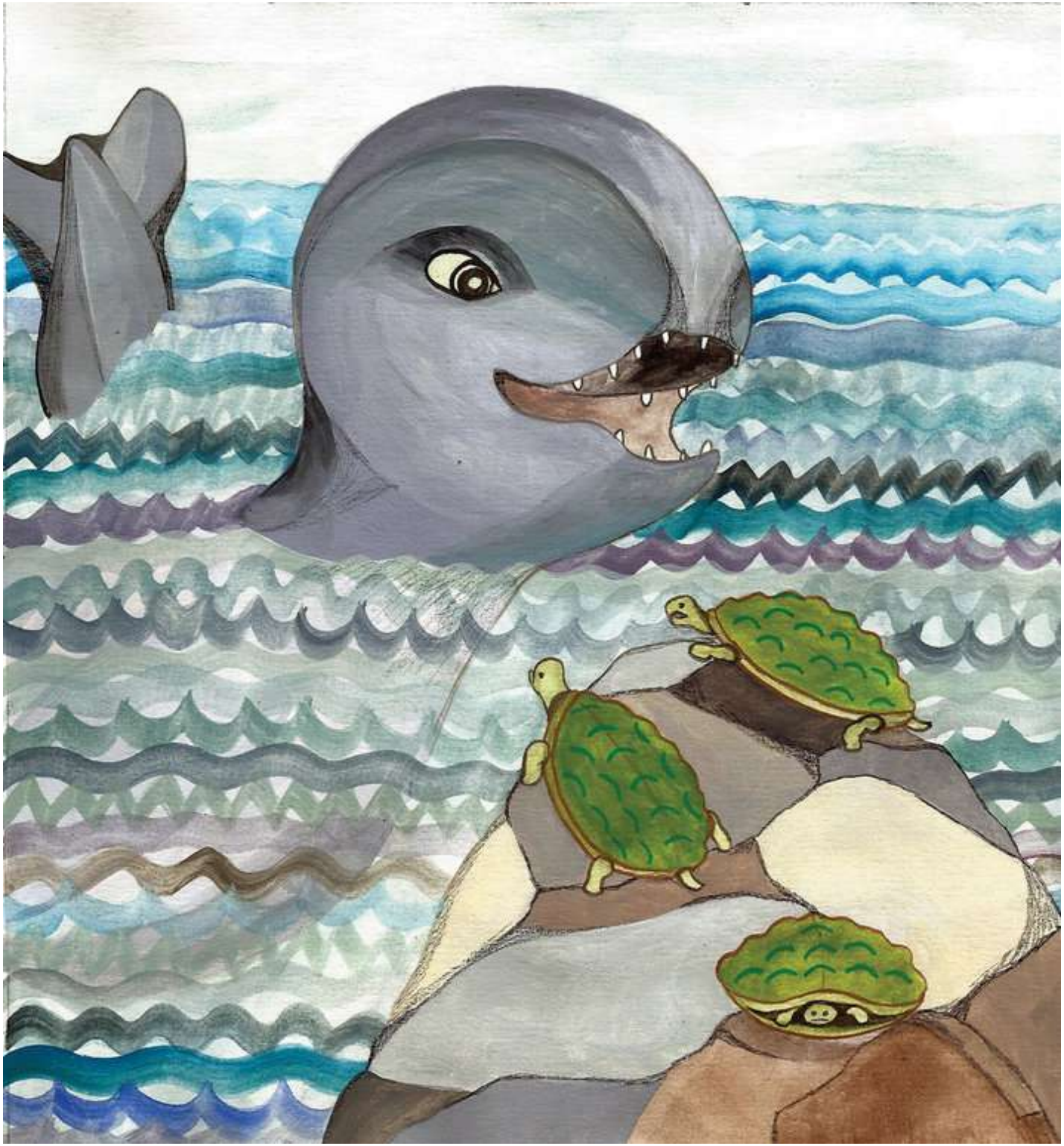

"क्यो?" कछुओं ने पूछा। "अपने यहाँ तो बहुत अच्छा लगता है।"

"हमारे लिए पानी कुछ ज़्यादा ही गरम हो गया है," व्हेलों ने कहा। "हमें उत्तर की तरफ और आगे जाना होगा जहाँ मौसम ठण्डा रहता है।"

व्हेलें ठण्डे पानी में रहना पसंद करती हैं और साकूलैंड का पानी उनके लिए ज्यादा ही गर्म हो गया था।

कछुओं को व्हेलों के सुरीले गीतों की कमी खलेगी। लेकिन उन्होंने इसके बारे में ज़्यादा सोच-विचार नहीं किया। "कम से कम हमें तो कोई दिक्कत नहीं है," कछुओं ने सोचा।

"उँह, बेकार के नखरे दिखा रही हैं," उना ने मन ही मन सोचा। "बहुत ज़्यादा गर्मी हो या ठण्ड, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। व्हेलों को मेरे जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए।"

सभी जीव जल्दी ही व्हेलों को भूल गए। लेकिन फिर एक दिन, कछुए भी अपना घर-बार छोड़ कर जाने लगे।

"क्यों तुम लोग तो यहाँ खुश ही थे न?" जँगली बिल्लियों ने पूछा।

"यहाँ हमारे लिए बहुत थोड़ी रेत बची है," कछुओं ने कहा। कछुए रेतीले समुद्री तटों पर अण्डे देते हैं।

"रेत भला कहाँ चली गई?" जँगली बिल्लियों ने पूछा।

"क्या पता, हम तो बस इतना जानते हैं कि पहले रेत बड़ी चट्टान तक हुआ करती थी," बड़े, बुज़ुर्ग कछुए ने कहा। "लेकिन बड़ी चट्टान अब ज़्यादा बड़ी नहीं लगती - पानी बढ़ने से उसका काफ़ी बड़ा हिस्सा अब डूब चूका है।"

"बेचारे कछुओं के साथ बहुत बुरा हुआ। खैर, हमें तो कोई दिक्कत नहीं है," जँगली बिल्लियों ने सोचा।

कछुओं को जाते देख उना ने सोचा, "रेत पानी के अन्दर चली गई तो इससे मुझे क्या फ़र्क पड़ता है? कछुओं को मेरी तरह समझदारी से काम लेते हुए यह तय करना चाहिए था कि कहाँ रहा जाए।"

वह नाश्ते के लिए घास ढूँढने चल दी और फिर यह बात भूल ही गई।

उसके बाद जँगली बिल्लियाँ भी वहाँ से चली गईं। वे अब धारा में बढ़िया मछलियाँ नहीं पकड़ पाती थीं। धारा में अब पानी भी बहुत कम बहता था।

हिरन ने सोचा, "ओहो, जँगली बिल्लियों के लिए बड़ी मुश्किल हो गई थी। लेकिन कम से कम हम तो सही-सलामत हैं।"

उना ने गौर से धारा को देखा, "जँगली बिल्लियाँ काफ़ी सख़्तजान थीं, लेकिन शायद वे मेरे बराबर सख़्तजान नहीं थीं।"

एक दिन उना ने जो कुछ देखा वह उसे अजीब सा लगा।
जिस पहाड़ पर वह रहती थी, उसकी बर्फ़ हर साल पिघल जाती थी, बर्फ़ के टुकड़े की तरह, और उसकी धारा पानी से भर जाती थी। लेकिन इस बार वहाँ काफ़ी कम बर्फ़ थी।

उना को अपनी आँखों पर पक्की तरह यकीन नहीं हुआ और उसने सोचा, "शायद पहाड़ पर बर्फ़ सचमुच कम नहीं हुई। बस आज ऐसा लग रहा है।"

लेकिन उसके बाद अजीब से जानवर साकूलैंड में आने लगे।

हर कोई गायों से दोस्ती करना चाहता था। लेकिन उन्होंने किसी की ओर ध्यान ही नही दिया - वे बस घास चरतीं और चबाती चली जातीं। और उनकी सँख्या बहुत ज़्यादा थी!

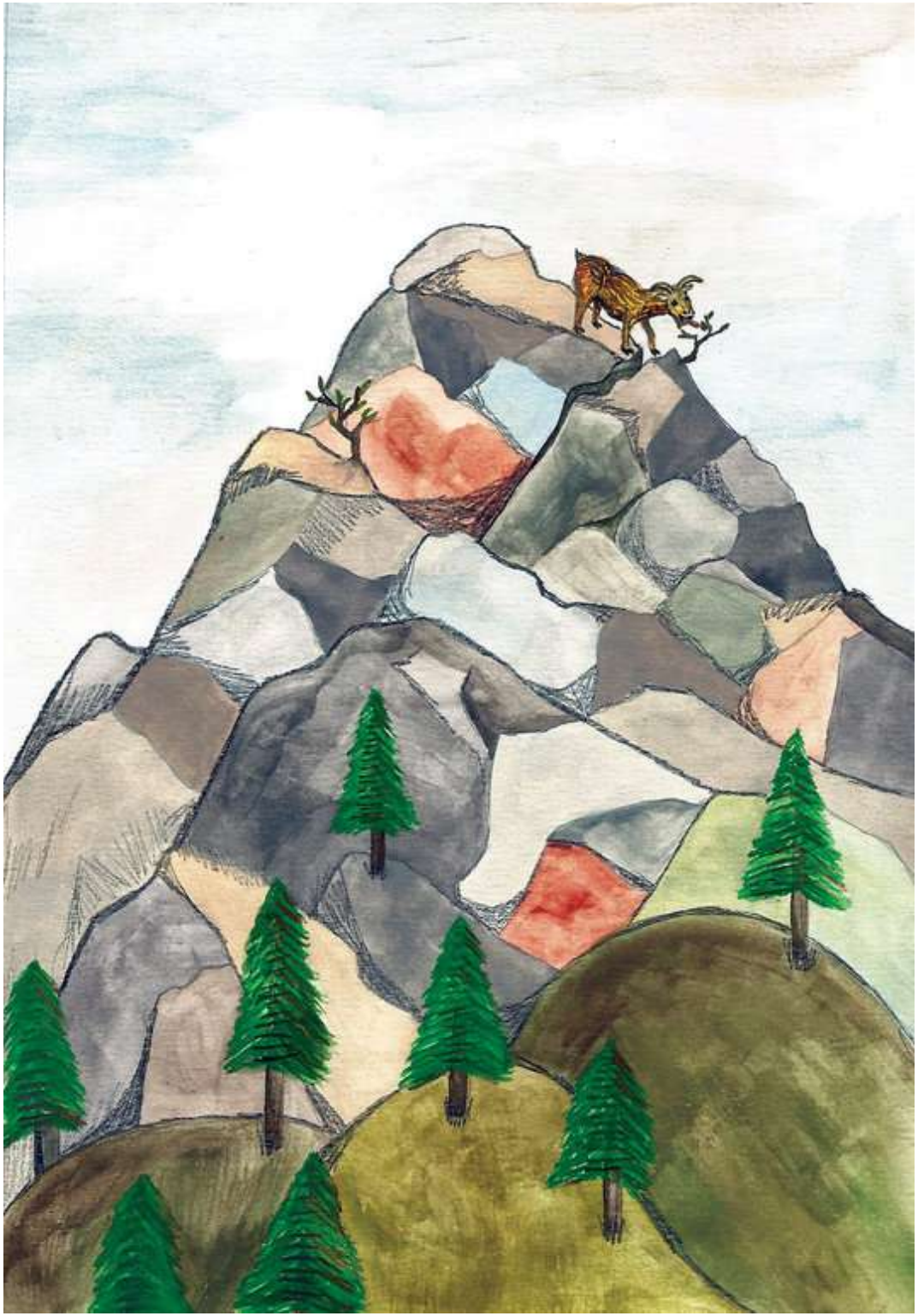

जब घास गायब होने लगी तो हिरन कुछ परेशान हुए। धीरे-धीरे हिरनों को अपनी पसन्द की घास चरने साकूलैंड से बाहर जाना पड़ा।

"उँह - अभी उन्हें पता नहीं कि मुझे क्या खाना पड़ता है," उना ने सोचा। "कभी-कभी तो चट्टानों पर काई चाट कर काम चलाती हूँ। और काई का स्वाद बिलकुल भी अच्छा नहीं होता।"

उना जब तक रह पाई, अपने पहाड़ पर बनी रही। लेकिन अब उसे अक्सर भरपेट खाने और पीने के पानी की कमी पड़ने लगी।

आख़िरकार भूखी-प्यासी उना कठिन पहाड़ी रास्ते से नीचे उतरी। उसने पहाड़ियों पर उगी कुछ घास चखी, लेकिन यह वैसी नहीं थी जैसी उसे पसन्द थी।

उसे एक घाटी में पानी की धारा मिली, लेकिन पानी के स्वाद में वैसा ताज़ापन नहीं था जिसकी वह आदी थी।

अब उना की समझ में आया कि बाकी जानवर साकूलैंड छोड़ कर क्यों चले गए - यह बहुत जरुरी
है कि आप वही खाना खाएँ जो आपके लिए सबसे ज्यादा अच्छा है और आपके आस-पास ही पानी भी होना चाहिये।

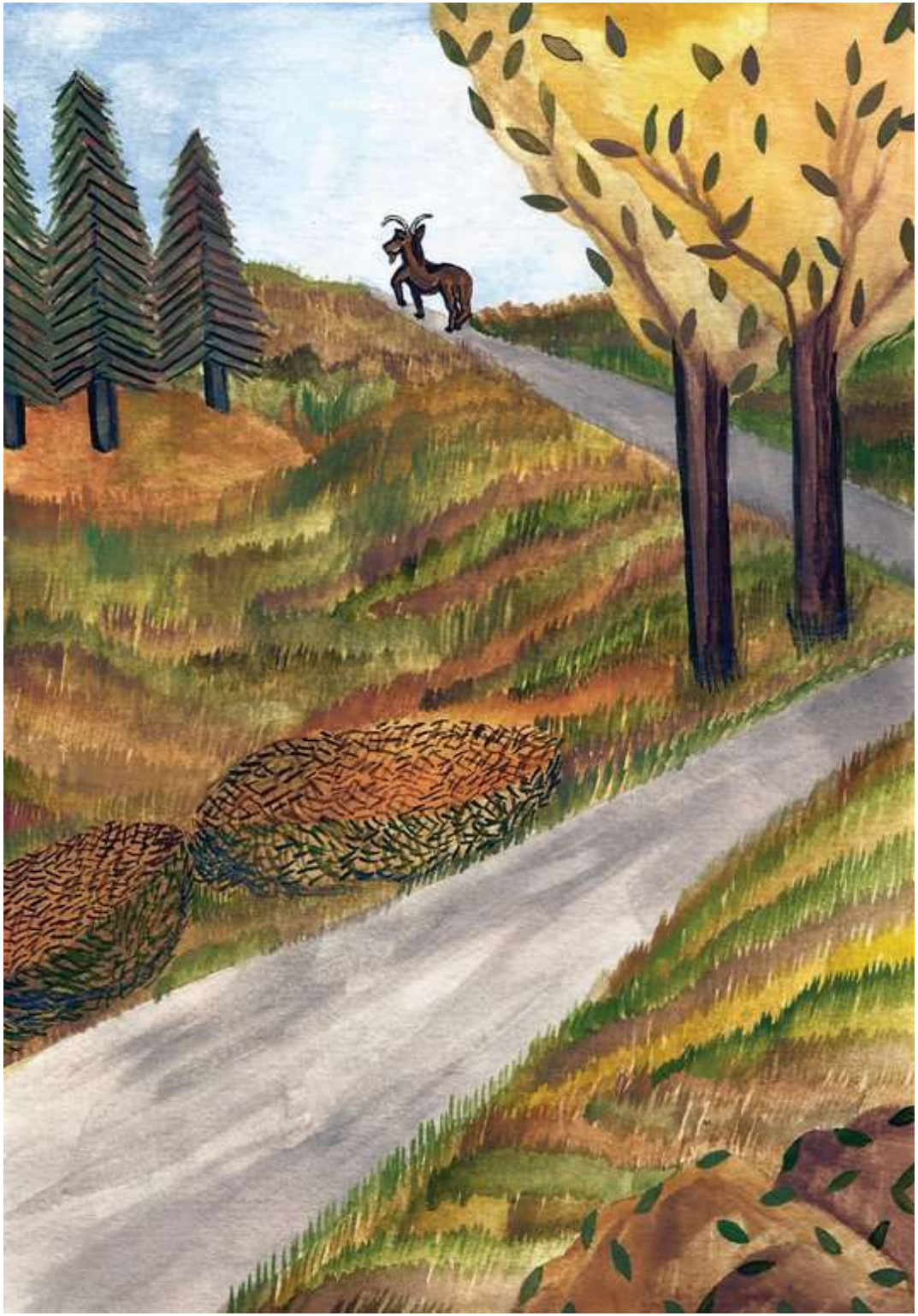

उसकी जान-पहचान के सब जीव तब साकूलैंड छोड़ कर गए थे जब उन्हें अपनी पसन्द का भोजन पाने में कठिनाई होने लगी या फिर पानी की धारा के मटमैले पानी में बदल जाने से वे ज़्यादा प्यासे रहने लगे, या फिर उनके यहाँ के पेड़ दूसरों के घर बनाने के लिये काट डाले गए।

जब जलवायु में बदलाव से दूसरों की ज़िन्दग़ी पर असर पड़ रहा था तब उना और उसके दोस्त यही सोचते रहे कि "कम से कम हमें तो दिक्कत नहीं है।" जब समुद्र गर्म होने लगा तो बेहतर ठिकाने की तलाश में व्हेलें चली गईं। तब कछुओं, हिरनों और उना को कोई चिन्ता नहीं हुई।

लेकिन बाद में उन्हें मानना पड़ा "अब तो हमें भी दिक्कत है।" उना को मानना पड़ा कि दोस्तों का अपने
आस-पास रहना बेहद जरुरी है। उसने उन्हें ढूँढने की ठान ली।

लेकिन हमें तो कोई दिक्कत नहीं है!

उना और साकूलैंड में रहने वाले उसके दोस्त, हमारी ही तरह जलवायु में आते बदलाव का सामना कर रहे हैं। हम इन्सान लगातार पहले से ज़्यादा मात्रा में ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में छोड़ रहे हैं - कोयले और खनिज तेल के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है। कार्बन डाइऑक्साइड तब भी निकलती है जब हम पेड़ काटते हैं। इसके अलावा गाय-भैसों के पेट में चारा पचने से मीथेन गैस निकलती है, कारों और दूसरे वाहनों से नाइट्रस ऑक्साइड निकलती है।

यह ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में मिल कर दुनियाभर में गर्मी बढ़ाने (वैश्विक तापमान वृद्धि) और जलवायु में आते बदलाव (जलवायु परिवर्तन) का कारण बनतीं हैं। जैसे-जैसे ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में और ज़्यादा गर्मी बढ़ा रही हैं, ध्रुवों पर जमी बर्फ़ पिघलती जा रही है और समुद्रों का जल-स्तर बढ़ता जा रहा है।

इस सबका मतलब है कि मौसम का मिजाज बदलता जा रहा है - अब गर्मियों में ठण्ड और सर्दियों में गर्मी होती है, और बारिश भी समय पर नहीं होती। जलवायु में आते बदलाव की इस घटना को ही जलवायु परिवर्तन कहा जाता है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

- पेड़ कटते हैं तो वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है। जीव-जन्तुओं का घर, जँगल, ख़त्म हो जाता है और उन्हें भोजन की तलाश में दूर-दूर तक जाना पड़ता ।

- असमय वर्षा के कारण किसान सही ढँग से फसलें नहीं ले पा रहे। अक्सर, वे बीज बोते हैं लेकिन वर्षा नहीं होती और फसल बर्बाद हो जाती है। ज़रा उस दुनिया की कल्पना करें जहाँ आम या फिर चॉकलेट नहीं होंगे क्योंकि बहुत ज़्यादा बारिश होने या बिल्कुल बारिश न होने से फसल बर्बाद हो गई है!

- मौसम का बदलता मिज़ाज मनुष्यों को भी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, तूफ़ान, बाढ़ या फिर सूखे के दौरान लोगों को अपने घरों को छोड़ कर जाना पड़ता है।

- वातावरण में प्रदूषण की मात्रा का बुरा असर हमारे स्वास्थ्य पर भी पड़ता है, इससे हम जल्दी-जल्दी बीमार होते हैं। जलवायु परिवर्तन से मनुष्य, पृथ्वी और उस पर रहने वाले सभी प्राणी प्रभावित हो रहे हैं।

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Story Attribution:

This story: हमें तो कोई दिक्कत नहीं है! is translated by Madhubala Joshi . The © for this translation lies with Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'At Least I'm Okay!', by Alison Byrnes . © Pratham Books , 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books. The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative. This book was created for StoryWeaver, Pratham Books, with the support of Bijal Vachharajani (Guest Editor).

Images Attributions:

Cover page: A mountain goat, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A mountain goat on top of a hill , by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Animals by a stream in the forest, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A mountain goat watching deer drink water from a stream, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: A group of animals by the sea, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A whale and three turtles by the sea, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Waves in the sea, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Waves in the sea, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Wildcats and turtles, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Mountain goat imagining turtles climb up a hill, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: Animals by a hillside stream, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: A mountain goat looking at a stream in a hill, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: Grazing cows, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: A mountain goat on top of a mountain, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Una, the Mountain Goat, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: A mountain goat climbing a hill, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Trees on hills, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Una the mountain goat thinks about climate change, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Rocky mountain, by Alison Byrnes © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

हमें तो कोई दिक्कत नहीं है!

(Hindi)

संक्षेपरू पहाड़ी बकरी उना खूबसूरत साकूलैंड के एक पहाड़ की चोटी पर रहती थी। वहाँ के सब जीव अपने घर-देश से बहुत प्यार करते थे लेकिन एक दिन वहाँ की जलवायु बदलने लगी और एक-एक कर सब जीव साकूलैंड छोड़ कर जाने पर मजबूर हो गए। यह कहानी जलवायु में बदलाव और उसकी वजह से जीवों और संसार पर उसके असर के बारे में है।

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

Always Free – Always will be!

Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.
This page is added for identification.